प्रो० धनंजय कुमार
सहायक प्राध्यापक
वाणिज्य विभाग
V.S.J. महाविद्यालय
राजनगर मधुबनी

B.com (HONS)
P1 – A/cs & finance (HONS)
Paper – I
Financial Accounting
Date – 21.05.2020

UNIT – I.

TOPIC – PRINCIPLES OF ACCOUNTING

(2) लेखांकन के आधारभूत सिद्धान्त :→

लेखांकन की आधारभूत संकल्पनाओं के विस्तार के पश्चात अब दूसरा सिद्धान्त लेखांकन के आधारभूत सिद्धान्त पर चर्चा करेंगे. लेखांकन की आधारभूत संकल्पनाओं के आधार पर ही लेखांकन के आधारभूत सिद्धान्तों का निर्माण किया गया है. उसके अंतर्गत निम्नलिखित सिद्धान्तों को शामिल किया है :→

(क) द्विपक्षीय सिद्धान्त (Principle of Dual Aspect) :— यह सिद्धान्त इस बात को स्पष्ट करता है कि प्रत्येक व्यवसायिक लेनदेनों के दो पक्ष होते हैं. अर्थात् जब कोई व्यवसाय माल प्राप्त करता है तो वह क्रेता तथा जो व्यवसाय उसे देता है उसे विक्रेता कहा जायगा. इसी प्रकार यदि कोई वस्तु किसी के पास आती है तो वही वस्तु किसी दूसरे के पास से जायेगी. इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक लेन-देन कम से कम दो खातों पर प्रभाव डालता है.

इस सिद्धान्त के अनुसार व्यवसायिक लेनदेनों का लेखा करने के बाद तैयार किए गए तलपट के दोनों पक्षों का योग बराबर होता है, तथा Balance sheet के दोनों पक्षों का योग भी बराबर. इसी सिद्धान्त के कारण होता है. Assets, Liabilities तथा Capital के बीच संबंध भी लेखांकन के द्विपक्षीय सिद्धान्त को स्पष्ट करता है. इस संबंध को ही लेखांकन समीकरण कहा जाता है. यह समीकरण इस प्रकार दर्शाया गया है : ———

Scanned with CamScanner

Accounting Equation:—

| Assets = Capital + Liabilities |

वर्तमान में लेखांकन प्रणाली इसी समीकरण पर आधारित है जिसे Double Entry System के नाम से जाना जाता है.

(क) आय प्राप्ति का सिद्धांत (Principal of Revenue Realisation):— लेखांकन की शब्दावली में आय (Revenue) का अर्थ माल के विक्रय से प्राप्त या प्राप्त होने वाली राशि से होता है. यह सिद्धांत इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि आगम को किस स्तर पर अर्जित मानना चाहिए. इस संबंध में विद्वानों ने निम्नलिखित आधार का सुझाव दिया है:—

(i) विक्रय के आधार पर, अर्थात् विक्रय उस समय पूर्ण माना जाता है, जब माल के क्रेता को माल के स्वामित्व का अधिकार हस्तांतरित कर दिया जाये तथा उससे माल का दाम या भुगतान करने की प्रतिज्ञा प्राप्त कर ली जाये.

(ii) रोकड़ के आधार पर अर्थात् इस आधार आगम को उस समय कमाया हुआ माना जाता है जब वह वास्तव में भुगतान स्वरूप प्राप्त हो जाय. उधार बिक्री में स्वामित्व के हस्तान्तरण के दिन आय प्राप्ति नहीं मानी जायेगी, बल्कि जिस समय रोकड़ प्राप्त होगी उसी समय आय की प्राप्ति मानी जायेगी. किराया क्रय पद्धति एवं किश्त भुगतान पद्धति में यह सिद्धांत अपनायी जाती है.

(iii) उत्पादन के आधार पर अर्थात् इस सिद्धांत के अनुसार निर्माण कार्य के पूर्ण हुए भाग की आगम को अर्जित मान लिया जाता है. इसमें माल के विक्रय या भुगतान की प्राप्ति की कोई शर्त नहीं होती है. यह सिद्धांत विशेष रूप से ठेकेदारों द्वारा इमारतों के निर्माण में अपनाया गया है.

Scanned with CamSc

(c) आय एवं व्यय के मिलान का सिद्धांत अर्थात् आगम प्राप्त करने के लिए उपयोग की गई लागतों को खर्च कहा जाता है, प्रत्यक्ष रूप से कच्चे माल की लागत, भाड़ा, मजदूरी, वेतन, किराया एवं अन्य उत्पादन व्यय, विक्रय एवं वितरण व्ययों आदि खर्चों में शामिल किये जाते हैं। लेखांकन में इन खर्चों का बहुत महत्व है क्योंकि आगम से लागतों की तुलना करके ही आय का निर्धारण किया जा सकता है। यह स्पष्ट है कि समस्त व्यावसायिक क्रियाएँ लाभ के उद्देश्य से ही निर्मित होती हैं। लाभ ही प्रेरक शक्ति होती व्यवसाय की स्थापना, व्यवस्था और संचालन के लिए आवश्यक है। इस सिद्धांत के अनुसार आय का निर्धारण आय एवं व्यय के मिलान द्वारा ही होता है।

(d) पूर्ण अभिव्यक्ति का सिद्धांत (Principal of Full disclosure) अर्थात् इस सिद्धांत के अनुसार लेखांकन में सभी महत्वपूर्ण सूचनाओं की अभिव्यक्ति होनी चाहिए, मतलब लेखापुस्तकों को निष्पक्ष रूप से ईमानदारी के साथ तैयार करना चाहिए। जान बूझकर कोई गड़बड़ी नहीं करनी चाहिए। इस सिद्धांत का प्रमुख उद्देश्य व्यवसाय के स्वामियों, लाभांशधारों, अंशधारियों, लेनदारों, एवं विनियोगकर्ताओं को व्यवसाय की वास्तविक स्थिति से परिचित करवाना होता है।

सूचनाओं की पूर्ण अभिव्यक्ति से यह तात्पर्य नहीं है कि व्यावसायिक रहस्य को गोपनीय न रखी जाये बल्कि इसका उद्देश्य केवल यह है कि जान-बूझकर लेखांकन में किसी छलित उद्देश्य से गड़बड़ी न की जाय।—

(e) ऐतिहासिक लागत का सिद्धांत (Historical Cost Principal) :→ इस सिद्धांत के अनुसार सभी व्यावसायिक सौदे लेखापुस्तकों में प्राप्त करने की मौद्रिक लागत पर ही लिखा जाना चाहिए। इस पद्धति को ऐतिहासिक इसलिए कहा जाता है क्योंकि संपत्ति एवं दायित्व को प्रारंभिक वर्ष उस मूल्य पर दिखाया जाता है। हो सकता है बाजार में इसका मूल्य लागत मूल्य से कम हो या अधिक हो। यह पद्धति अन्य पद्धतियों से उत्तम माना जाता है क्योंकि यह आधार

Scanned with CamSc

निश्चित एवं विश्वसनीय होता है तथा उसका मूल्यांकन निष्पक्ष होता है।

(3) लेखांकन के परिवर्तनशील सिद्धान्त
Modifying Principles of Accounting :—

यह सिद्धान्त व्यवसायियों द्वारा अपनी भिन्नता के साथ अपनाया जाता है। इन सिद्धान्तों को अपनाने से थोड़ी स्वतंत्रता होती है। व्यवसाय की प्रकृति के अनुसार समय-2 पर परिवर्तन किया जाता है। यह परिवर्तन वित्तीय विवरणों को अधिक उपयुक्त एवं विश्वसनीय बनाने के लिए किए जाते हैं। इसके अंतर्गत निम्नलिखित सिद्धान्तों को शामिल किया गया है :—

(a) महत्वपूर्ण तथ्यों का परिवर्तनशील सिद्धान्त
(Modifying Principal of Mater)

(b) समरूपता का परिवर्तनशील सिद्धान्त
(Modifying Principal of Consistency)

(c) रूढ़िवादिता का परिवर्तनशील सिद्धान्त
(Modifying Principal of Conservatism)

(d) समयबद्धता का परिवर्तनशील सिद्धान्त
(Modifying Principal of Timeliness)

(e) रूप रेखा पर तथ्य के प्रमुखता का परिवर्तनशील सिद्धान्त
(Modifying Principal of Substance over Form)

(f) लागत एवं लाभ का परिवर्तनशील सिद्धान्त
(Modifying Cost and Benefit Principal)

Scanned with CamSc